Semester 3 MJC + MIC
Meaning and definitions of School
विद्यालय का अर्थ एवं
परिभाषाएं
Dr Amar bharti Assistan
POSTER MAKER
Poster Maker

3) **वास्तविक अर्थ**–भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के मतों को जानने के पश्चात् आवश्यक है कि विद्यालय के वास्तविक अर्थ को जाना जाए। वस्तुतः विद्यालय का तात्पर्य उस स्थान, साधन या संस्था से है, जहाँ पर देश तथा समाज की प्रत्येक नवजात पीढ़ी को उनकी क्षमता एवं बुद्धि के अनुरूप निश्चित विधि से सुप्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा उस राष्ट्र और समाज के विज्ञान कला–कौशल, धर्म, नैतिकता एवं दर्शन आदि को जीवन में प्रयोग करने का ज्ञान कराया जाता है।

इस प्रकार विद्यालय के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं जो इस प्रकार हैं–

**जॉन ड्यूवी (John Dewey) के अनुसार,** "विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है, जहाँ जीवन के कुछ गुणों एवं कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा इस उद्देश्य से दी जाती है कि बालक का विकास वांछित दिशा में हो।"

**जे.एस.रॉस (J.S. Ross) के अनुसार,** "विद्यालय वे संस्थाएँ है जिनको सभ्य मनुष्य द्वारा इस उद्देश्य से स्थापित किया जाता है कि समाज में सुव्यवस्थित और योग्य सदस्यता के लिए बालकों को तैयारी में सहायता मिले।"

**टी.पी. नन (T.P. Nunn) के अनुसार,** "विद्यालय को इस प्रकार का स्थान नहीं समझना चाहिए कि जहाँ केवल निश्चित ज्ञान ही सीखा जाता है बल्कि ऐसा स्थान समझना चाहिए जहाँ बालकों की क्रियाओं को उन निश्चित रूपों में प्रशिक्षित किया जाता है जो इस विशाल संसार में सबसे महान और सबसे अधिक महत्त्व वाली हैं।"

**ए.के.सी. ओटावे (A.K.C. Ottaway) के अनुसार,** "विद्यालय को एक ऐसा सामाजिक आविष्कार समझना चाहिए जो कि समाज के बालकों के लिए विशेष प्रकार का शिक्षण प्रदान करने के लिए हो।"

**श्री एस. बालकृष्ण जोशी के अनुसार,** "किसी की उन्नति का निर्णय विधान सभाओं न्यायालयों एवं कारखानों से नहीं वरन् विद्यालय में होता है।"

**According to Sri S. Balkrishan Joshi,** "The progress of a nation is decided not in legislation, not in court, not in factories, but in school."

वर्तमान समय के विद्यालयों का स्वरूप बाल केन्द्रित है। विद्यालय मात्र निश्चित विषयों का ज्ञान ही छात्र–छात्राओं को नहीं देता बल्कि वे बातें जो बालक के सर्वांगीण विकास से सम्बन्धित है, इसके क्षेत्र में आती है।

**बालकृष्ण जोशी के अनुसार,** "विद्यालय आध्यात्मिक संगठन है जिसका अपना स्वयं का विशिष्ट व्यक्तित्व है। विद्यालय गतिशील सामुदायिक केन्द्र है जो चारों ओर जीवन एवं शक्ति का संचार करता है। विद्यालय एक आश्चर्यजनक भवन है, जिसका आधार सद्भावना है– जनता की सद्भावना, माता–पिता की सद्भावना, छात्रों की सद्भावना। सारांश में एक सुसंचालित विद्यालय एक सुखी परिवार, एक पवित्र मन्दिर, एक सामाजिक केन्द्र, लघु रूप में एक राज्य एवं मनमोहक वृन्दावन है जिसमें इन सभी बातों का सुन्दर मिश्रण होता है।"

विद्यालय की उक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि–

1) विद्यालय समाज द्वारा निर्मित संस्था है।
2) इसकी स्थापना का उद्देश्य मनुष्य की विशिष्ट ज्ञान, व्यवसायों एवं कार्यों की शिक्षा देना है।
3) विद्यालय एक भवन न होकर वातावरण होता है जिसकी अपनी निश्चित संस्कृति और व्यवस्था होती है।
4) यह समाज का लघुरूप है जिसका उद्देश्य समाज द्वारा मान्य व्यवहार व कार्य की शिक्षा देना है। यह समाज के उत्कृष्ट रूप का ही प्रतिनिधित्व करता है।
5) विद्यालय शिक्षा का औपचारिक सक्रिय अभिकरण है। इसके सदस्यों में परस्पर क्रिया–प्रतिक्रिया चलती रहती है।